

## अध्याय-5

# अर्थ-व्यवस्था और आजीविका

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटेन विश्व का पहला देश बना, जहाँ कृषि एवं उद्योग क्षेत्र में मशीनीकरण प्रारंभ हुआ और औद्योगीकरण के एक नये युग का सूत्रपात हुआ।

### औद्योगीकरण

औद्योगीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वस्तुओं का उत्पादन मानव श्रम द्वारा न होकर मशीनों द्वारा कारखानों में किया जाता है। उत्पादन वृहद् पैमाने पर होता है और उत्पादित वस्तुओं की खपत के लिए बड़े बाजार की आवश्यकता होती है। इसकी सर्वप्रथम शुरुआत इंग्लैंड से हुई और धीरे-धीरे विश्व के अन्य देशों में फैलने लगी।

### औद्योगीकरण के कारण

- नये-नये मशीनों का आविष्कार
- कोयले एवं लोहे की प्रचुरता
- फैक्ट्री प्रणाली की शुरुआत
- सस्ते श्रम की उपलब्धता
- यातायात की सुविधा
- विशाल औपनिवेशिक स्थिति
- अधिशेष कृषि उत्पादन

### फैक्ट्री प्रणाली (कारखाना पद्धति)

- इस प्रणाली के अन्तर्गत वृहद् पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन मशीनों द्वारा कारखानों में होता है।
- नये-नये मशीनों का आविष्कार, पूँजी निवेश, सस्ते श्रम की उपलब्धता फैक्ट्री प्रणाली के विकास का मुख्य कारण थे।

### उपनिवेशवाद

आर्थिक हितों की प्राप्ति के लिए राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधिपत्य स्थापित करने की प्रक्रिया उपनिवेशवाद है। औद्योगीकरण के फलस्वरूप उत्पादित वस्तुओं को बेचने के लिए बाजार की आवश्यकता थी। साथ ही वस्तुओं को तैयार करने के लिए कच्चे माल की आवश्यकता थी। इन दोनों ही अवस्थाओं ने यूरोप के लोगों को अपने देशों से बाहर की दुनिया में पैर फैलाने पर मजबूर कर दिया। इस प्रकार औद्योगीकरण ने उपनिवेशवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया।

ब्रिटेन में कोयले एवं लोहे के खानों की प्रचुरता थी। चूँकि मशीनों का निर्माण के लिए लोहे, एवं मशीनों को संचालित करने के लिए कोयला आधारित वाष्प शक्ति का आवश्यकता थी। यही कारण है कि कोयला एवं लौह उद्योग ने औद्योगीकरण को गति प्रदान की।

- 1769 ई0 में जेम्स वाट ने वाष्प इंजन का आविष्कार किया।
- 1769 ई0 में वाल्टन निवासी रिचर्ड आक्राईट ने सूत काटने की स्पिंनिंग फ्रेम नामक मशीन का निर्माण किया।
- 1770 ई0 में स्टेडहील निवासी जेम्स हारग्रीब्ज ने सूत काटने की मशीन स्पिंनिंग फ्रेम जेनी बनाई।
- 1773 ई0 में लंकाशायर के जॉन के ने फ्लाईंग शटल का आविष्कार किया।
- 1785 ई0 में एडमंड कार्टराइट ने वाष्प से चलने वाला पावरलूम बनाया।
- 1815 ई0 में हम्फ्री डेवी ने खानों में काम करने के लिए सेफ्टी लैम्प का आविष्कार किया।
- 1815ई0 में हेनरी बेसेमर ने शक्तिशाली भट्ठी को विकसित किया।
- ब्रिटेन में लंकाशायर एवं मैनचेस्टर सूती वस्त्र उद्योग का बड़ा केन्द्र था।
- बाड़ाबंदी प्रथा—अठारहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में बाड़ाबंदी प्रथा की शुरुआत हुई, जिसमें जमींदारों ने छोटे-छोटे खेतों को खरीद कर बड़े-बड़े कृषि फॉर्म में परिवर्तित किया एवं उसकी घेराबंदी की।
- 1813 में ब्रिटिश संसद ने चार्टर एक्ट पारित किया, जिसके तहत ईस्ट इंडिया कम्पनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया गया और स्वतंत्र व्यापार की नीति का मार्ग प्रशस्त किया गया।

#### औद्योगीकरण के परिणाम

- नगरों का विकास
- कृटीर उद्योग का पतन
- साम्राज्यवाद का विकास
- समाज में वर्ग विभाजन एवं बुर्जुआ वर्ग का उदय
- फौक्ट्री मजदूर वर्ग का जन्म
- स्लम पद्धति की शुरुआत
- साम्राज्यवाद :- सैन्य एवं अन्य तरीके से विदेशी भू-भाग के प्रदेशों को अपने अधीन कर अपना राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करना साम्राज्यवाद कहलाता है।

औद्योगीकरण के फलस्वरूप बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन प्रारंभ हुआ, जिसकी खपत के लिए यूरोप में उपनिवेश स्थापना की होड़ शुरू हो गई और आगे चलकर इस उपनिवेशवाद ने साम्राज्यवाद

का रूप ले लिया। उपनिवेशवाद में जहाँ आर्थिक नियंत्रण स्थापित किया जाता है वहीं साम्राज्यवाद में आर्थिक और राजनैतिक दोनों तरह के नियंत्रण स्थापित होते हैं।

### बुर्जुवा वर्ग

औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप मध्यमवर्गीय बुर्जुआ वर्ग की उत्पत्ति हुई। यह वर्ग आधुनिक शिक्षा प्राप्त था, जिसने आगे चलकर देश के राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

### स्लम पद्धति

औद्योगीकरण के फलस्वरूप औद्योगिक मजदूर वर्ग का उदय हुआ। ये मजदूर शहर में छोटे-छोटे घरों में निवास करने के लिए बाध्य थे, जहाँ कोई बुनियादी सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

### भारत में फैक्ट्रियों की स्थापना

- भारत में सर्वप्रथम सूती कपड़े की मिल की नींव 1851 ई० में बम्बई में डाली गयी।
- 1917 ई० में कलकत्ता में देश की पहली जूट मिल हुकुम चंद ने स्थापित किया।
- 1907 ई० में जमशेदजी टाटा ने झारखंड के साकची नामक स्थान पर टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी (TISCO) स्थापना की।
- 1910 ई० में इन्होंने टाटा हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन की स्थापना की।
- भारत में कोयला उद्योग का प्रारंभ 1814 ई० को हुआ।
- 1916 ई० में ब्रिटिश सरकार ने एक औद्योगिक आयोग नियुक्त किया ताकि भारतीय उद्योग तथा व्यापार के विकास हेतु वित्त से संबंधित प्रयत्नों के लिए उन क्षेत्रों का पता लगाना जिसे सरकार सहायता दे सके।
- 1921 ई० में सरकार ने राजस्व आयोग नियुक्त किया और इब्राहिम रहीमतुल्ला को आयोग का प्रधान बनाया गया।
- भारत में 1895 में पंजाब नेशनल बैंक, 1905 में बैंक ऑफ इंडिया, 1907 में इंडियन बैंक, 1911 में सेंट्रल बैंक, 1913 में द बैंक ऑफ मैसूर तथा ज्वाइंट स्टॉक बैंकों की स्थापना हुई।

### मजदूरों की आजीविका

- औद्योगीकरण ने नई फैक्ट्री प्रणाली को जन्म दिया, जिससे कुटीर उद्योगों के मालिक मजदूर बन गये। ये मजदूर अपनी आजीविका के लिए बड़े-बड़े उद्योगपतियों से प्राप्त वेतन पर निर्भर हो गए। औद्योगीकरण ने मजदूरों की आजीविका को इस तरह नष्ट कर दिया था कि उनके पास दैनिक उपयोग की वस्तुओं को खरीदने के लिए धन नहीं रह गया था। अतः मजदूरों ने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आंदोलन का रुख किया।
- 1832 ई० में मजदूरों की स्थिति में सुधार के लिए सुधार अधिनियम पारित किया गया।
- 1938 ई० में लंदन श्रमिक संघ के नेतृत्व में मजदूरों ने चार्टिस्ट आन्दोलन का प्रारंभ हुआ।
- 1918 ई० में इंग्लैंड के सभी व्यस्क स्त्री-पुरुष को मताधिकार प्रदान किया गया।

- भारत में 1881 ई0 में पहला फैक्ट्री एक्ट पारित हुआ । इसके तहत 7 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों में काम करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया । 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों एवं महिलाओं के काम के घंटे तथा मजदूरी को निश्चित किया गया ।
- 31 अक्टूबर 1920 ई0 को अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना की गई, जिसके प्रधान लाला लाजपत राय बनाए गए ।
- 1919 ई0 को अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की स्थापना की गई ।
- भारत में 1926 ई0 में मजदूर संघ अधिनियम पारित हुआ, जिसके द्वारा पंजीकृत मजदूर संघों को मान्यता प्रदान की गई ।
- 1948 ई0 में न्यूनतम मजदूरी अधिनियम पारित किया गया, जिसके द्वारा उद्योगों में मजदूरी की दरें निश्चित की गई ।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 1962 ई0 में केन्द्र सरकार ने मजदूरों की स्थिति में सुधार हेतु राष्ट्रीय श्रम आयोग का गठन किया गया, जिसके माध्यम से मजदूरों को रोजगार उपलब्ध कराने एवं मजदूरी में सुधार का प्रयास किया गया ।

### कुटीर उद्योग का महत्व एवं उसकी उपयोगिता

- घरों में काम करनेवाले कारीगर अपने हाथ से अथवा हाथ से चलाये जाने वाले यंत्रों के द्वारा वस्तुओं का उत्पादन करते थे। उत्पादन का यह दौर आदि-औद्योगिकरण (कुटीर उद्योग) के नाम से जाना जाता है ।
- कुटीर उद्योग का महत्व और विशेषता है कि यह बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर, कौशल में वृद्धि, उद्यमिता में वृद्धि, उपयुक्त तकनीक का बेहतर प्रयोग, कम पँजी निवेश तथा जनसंख्या का बड़े शहरों में प्रवाह को रोकता है ।  
आधुनिक औद्योगिक प्रणाली के विकास के पूर्व भारत का कुटीर उद्योग बहुत ही समृद्ध स्थिति में था। भारतीय मलमल और छींट तथा सूती वस्त्रों की मांग पूरे विश्व में थी, खासकर ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोगों हाथों से बनी हुई वस्तुओं को ज्यादा महत्व देते थे। भारत का कुटीर उद्योग न केवल स्थानीय आवश्यकता की पूर्ति के लिए माल उपलब्ध कराते थे, बल्कि वे निर्मित वस्तुओं का निर्यात भी करते थे ।
- औद्योगीकरण के फलस्वरूप जहाँ वस्तुओं का उत्पादन कम समय में बड़े पैमाने पर होने लगा, वहीं भारत में कुटीर उद्योग बंद होने के कागार पर पहुँच गया। क्योंकि मशीनों से निर्मित वस्तुओं की तुलना में कुटीर उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं के मूल्य अधिक थे। इस अवस्था को **निरुद्योगीकरण** कहते हैं ।
- स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार ने कुटीर उद्योग की उपयोगिता एवं उसके विकास के लिए 1948, 1956, 1977, 1980 की औद्योगिक नीति में लघु एवं कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन दिया गया ।

